अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. घोड़े के अवशेष कहाँ पाया गया है?

उतर – घोड़े के अवशेष सुतकोतड़ा में पाया गया है।

2. वर्द्धमान महावीर का जन्म कहाँ हुआ था?

उतर – वर्द्धमान महावीर का जन्म कुण्डलग्राम में हुआ था।

3. कुषाण वंश का संस्थापक कौन था?

उतर– कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसस था।

4. महरौली का लौह स्तंभ किसने बनाया था?

उतर– महरौली का लौह स्तंभ चन्द्रगुप्त द्वितीय बनाया था।

5. हर्षवर्द्धन के काल में कौन चीनी यात्री भारत आया था?

उतर– हर्षवर्द्धन के काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था?

6. गुप्तों की राजधानी कहाँ थी?

उतर – गुप्तों की राजधानी पाटलीपुत्र थी।

7. पल्लव वंश के संस्थापक कौन थे?

उतर – पल्लव वंश के संस्थापक सिंहविष्णु थे।

8. नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की थी?

उतर– नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमारगुप्त की थी।

9. महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम क्या था?

उतर – महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था।

10. भारत का नेपोलियन किसे कहा गया है।

उतर – समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

Short type Question

1. मोहनजोदड़ो

यह सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख नगर था जो सिंधु नदी के तट पर बसा था। यहां पर अनेक बड़े बड़े भवनों के अवशेष प्राप्त हुए हैं । मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानागार के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ 'मुर्दों का टीला' होता है।

2. जैन धर्म

यह भारत का प्राचीन धर्मों में से एक है इसके संस्थापक ऋषभदेव थे। जिनका उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। इनमें कुल 24 तीर्थंकर हुए हैं जिनमें 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा 24 वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे। महावीर महात्मा बुद्ध के समकालीन थे।

3. अशोक का धम्म

सम्राट अशोक के द्वारा चलाए गए नए सिद्धांत को अशोक का धम्म कहा जाता है। यह एक प्रकार का नैतिक उत्थान का मार्ग था । यह एक तरह से कोई नया धर्म नहीं था बल्कि प्रजा के नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप जीवन यापन करने के लिए प्रेरित करने वाले साधन थ।। सम्राट अशोक ने धम्म के प्रचार प्रसार के लिए धम्म महामात्र की नियुक्ति भी की थी।

4 बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य लिखें।

बौद्ध धर्म के अनुसार निम्नलिखित चार आर्य सत्य थे

1. दुःख :– बुद्ध के अनुसार जीवन में दुख ही दुख है ।
2. दुःख के कारण :– महात्मा बुद्ध के अनुसार दुख का कारण तृष्णा अर्थात इच्छा होती है ।
3. दुःख निरोध :– महात्मा बुद्ध के अनुसार दुख दूर कर होने के होने के लिए निवारण आवश्यक है इसलिए तृष्णा पर विजय आवश्यक है ।
4. दुःख निरोध के उपाय :– महात्मा बुद्ध ने अपने चौथे आर्यसत्य में दुख दूर करने के उपाय बताए हैं।

5. मथुरा शैली और गांधार शैली

मथुरा तथा गांधार शैली का विकास कुषाण के शासनकाल में हुआ था और मुख्य रूप से यह अपने चरम पर कनिष्क के शासन काल में पहुँचा।

मथुरा शैली में भारतीय संस्कृति की दृष्टि दिखाई देती थी जिसमें आदर्शवाद एवं आध्यात्मिकता का मिश्रण था। वही गांधार शैली में यूनानी शैली का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था। इस शैली के मूर्तियों के मुख पर तेज भारी.भरकम सुडौल शरीर घुंघराले बाल एवं झिलेदार वस्त्रों का प्रयोग होता था।

long type question

सम्राट तथा विजेता के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य का मूल्यांकन करें।

या

चन्द्रगुप्त मौर्य के उपलब्धियों का संक्षिप्त वर्णन करें।

या

चन्द्रगुप्त मौर्य भारत का प्रयास राष्ट्रीय सम्राट था इसकी विवेचना करें।

उतर – मौर्य सम्राज्य की स्थापना एक युगान्तरकारी घटना है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता इस वंश की नीव रखी थी। वह एक कुशल सेनानायक और वीर योद्धा था। वही चाणक्य एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं कुटनीति का महान ज्ञाता था। चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रारंभिक जीवन के बारें में कई किवदिन्तियाँ एवं परम्परा प्रचलित है। कोई ठोस प्रमाण कम उपलब्ध है।

चन्द्रगुप्त मौर्य के विषय अभियानों के क्रम के विद्वानों के बीच मतभेद है। कुछ का मानना है कि उसने सर्वप्रथम मगध को जीता था लेकिन इसकी पुष्टी नही होती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि उसने सर्वप्रथम पश्चिमोत्तर भारत के राज्यों को जीता। कहा जाता है कि विदेशी शासन के विरूद्ध जनता के बीच असंतोष का लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने विदेशी दासता से मुक्त कराया।

पंजाब पर अधिकार करने के बाद चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने मगध पर आक्रमण किया। मुद्राराक्षस के अनुसार कश्मीर के राजा पर्वत्तक ने सहायता की थी। दो वर्षो की युद्ध के बाद चन्द्रगुप्त ने पाटलीपुत्र पर अधिकार कर लिया। धनानंद की सैन्य शक्ति को देखते हुए ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि इस संघर्ष में भीषण रक्तपात हुआ होगा कालान्तर में चन्द्रगुप्त मौर्य को कश्मीर पर भी विजय प्राप्त हो गई थी। कश्मीर के नये राजा मलयकेतू जो पर्वत्तक का इसके बाद 321 ई0पू0 विधिवत रूप से चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक हुआ।

पंजाब और सिध में यूनानी शासन के उन्मोलन तथा मगध से नन्दवंश के विनाश के बाद चन्द्रगुप्त का शासन संपूर्ण उतर भारत में स्थापित हो गया। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत के अन्य प्रदेशों को जितना प्रारंभ कर दिया। सौराष्ट्र तथा पश्चिमी भारत के विजय का प्रमाण शक शासक रूद्रदामन के जूनागढ़ के अभिलेख से मिलता है। इस अभिलेख में स्पष्ट लिखा है कि पश्चिमी भारत और सौराष्ट्र के प्रांतीय गर्वनर पुष्यगुप्त ने सुदर्शन झील का निर्माण कराया था।

सौराष्ट्र विजय के बाद मालवा तथा उज्जैन दोनों पर चन्द्रगुप्त का अधिकार हो गया । कोकण क्षेत्र भी चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन इसका प्रमाण वहाँ से अशोक के शीलालेख का मिलना है। अशोक के अभिलेख में दक्षिण भारत चेर चोल और पाण्डय राज्यों का उल्लेख मिलने से यह स्पष्ट होता है कि सुदुर दक्षिण के कुछ राज्यों को छोडकर लगभग संपूर्ण दक्षिण भारत मौर्य सम्राज्य के अधीन था।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने बंगाल, नेपाल, मालवा तथा दक्षिण के राज्यों को जीता था जबकि कश्मीर उसे पर्वत्तक से प्राप्त हुआ था। इसके अलावा सेल्युकस से संधि के उपरांत एरिया, हेरात, जेड्रोसिया तथा पेरिपेनिसेडाई प्राप्त हुआ था। इस प्रकार भारत की पश्चिमी सीमा हिन्दुकुश पर्वत हो गई थी।

चन्द्रगुप्त मौर्य असाधारण से सैनिक प्रतिभा सम्पन्न योद्धा था। उसने अपने 24 वर्षो के निरंतर प्रयासों से उसने एक विशाल मौर्य सम्राज्य स्थापित किया उसका प्रांत काश्मीर से मैसूर तक और कामरूप से पश्चिम में बाबुल, कधार बलुचिस्तान तक फैला था। इससे विस्तृत सम्राज्य इससे पूर्व कभी स्थापित नही हुआ था। तभी यूनानी लेखक प्लूटार्क ने लिखा है'' चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख ससे सम्पूर्ण भारत को रौद डाला'' चन्द्रगुप्त मौर्य एक योग्य प्रशासक था।

राजनीतिक एकता के साथ उसने सम्पूर्ण भारत को पहली बार प्रशासनिक एकता प्रदान की। इस प्रकार का प्रभावशाली केन्द्रीकृत शासन भारत में कभी स्थापित नही हुआ।

चन्द्रगुप्त मौर्य एक योग्य सेनापति तथा प्रशासक था। उसने एक साधारण परिवार में जन्म लिया था और अपनी योग्यता और लगन से भारत में एक विशाल सम्राज्य की स्थापना की। वह भारत का प्रथम ऐतिहासिक एवं सार्वभौम सम्राट था। उसकी गणना भारत के महानतम सम्राटो में की जाती है। उसने सेल्यूकस को पराजित कर भारत की पश्चिमोत्तर सीमा सुरक्षित कर ली थी। उसने पहली बार सम्पूर्ण भारत में प्रशासनिक एकता प्रदान की। इस प्रकार का प्रभावशाली शासन भारत में कभी स्थापित नहीं हुआ। स्मिथ लिखते है कि कि '' वे सभी विशेषताएँ उसे इतिहास के महत्तम और सफलत्तम शासकों के बीच स्थाना देती है।''

long type question

गुप्तकालीन इतिहास को जानने के कौन कौन से स्त्रोत है?

उतर गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है। मौर्यो के पतन के पश्चात भारत में उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता को दूर करते हुए गुप्त शासकों ने सम्पूर्ण भारत को एकछत्र के अधीन लाकर खोई हुई भारतीय प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। इस युग में भारत ने राजनीतिक सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कला विज्ञान के क्षेत्र में भरपूर उन्नति की। इस वंश को जानने के लिए कई ऐतिहासिक स्त्रोतों में मौजूद है, जिनमें कुछ प्रमुख स्त्रोतों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–

1. पुरातात्विक स्त्रोत :– इस स्त्रोत को सबसे विश्वसनीय एवं प्रमाणिक माना जाता है। इसमें किसी प्रकार का हेर–फेर संभव नही है। इसके अंतर्गत निम्न स्त्रोत सामग्री को रखा जाता है :–

क) अभिलेख :– गुप्तकालीन प्रायः सभी शासको के अभिलख मिले जो गुप्तकालीन इतिहास जानने के लिए एक प्रमुख स्त्रोत है। गुप्तकालीन शिलालेख, प्रशस्तिपत्र, ताम्रपत्र, दानपत्र, स्तभ्भलेख आदि पर उत्कीर्ण किए गए हैं। इन अभिलेखो की भाषा संस्कृत है। इन अभिलेखों से गुप्त शासको की वंशावली, उनके विजय अभियानों आदि का विवरण है। अभिलेखो के प्राप्ति स्थल से उसके राज्य सीमा के निर्धारण से भी सहायता मिलती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमुख गुप्त अभिलेख समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त II के महरौली तथा उदयगिरी अभिलेख, कुमारगुप्त का मन्दसौर, भानुगुप्त के ऐरण अभिलेख इत्यादि है।

ख) सिक्के :– गुप्तकालीन सिक्के गुप्तकालीन इतिहास का प्रमुख स्त्रोत है। गुप्तकाल से भारतीय मुद्रा का इतिहास नवीन युग का प्रारंभ माना जाता है। गुप्त

युग में सोना, चाँदी, ताबा की मुद्राओं का निर्माण हुआ। सिक्कों के प्राप्ति स्थल से गुप्त साम्राज्य की तथा व्यापारिक संबंध चलता है। सिक्को पर उत्कीर्ण सम्राटो की आकृति एवं तिथि से उनके व्यक्तित्व एवं काल का पता चलता है। चन्द्रगुप्त I के सिक्के पर कुमारदेवी के चित्र से पता चलता है उनके संबंध लिच्छवी के कुल से था।

ग) मुहरे :– गुप्तकालीन अनेक मुहरे वैशाली से प्राप्त हुए हैं, जिनसे तत्कालिक प्रांतीय तथा स्थानीय व्यवस्था के विषय में प्रकाश पड़ता है।

घ) स्मारक :– गुप्तकालीन अनके स्मारक एवं कलाकृतिया प्राप्त होती है, जिससे गुप्तकालीन स्थापत्य कला की जानकारी होती है। भवन निर्माण की शैली का पता चलता है। गुप्तकालीन प्रमुख स्मारकों में भूमरा का शिव मंदिर, तिगवा का विष्णु मंदिर, नचना का पार्वती मंदिर, कानपुर का भीतरगाँव का लाडखान का मंदिर आदि। इस काल में मंदिर निर्माण एवं शिखर बनाने की परम्परा प्रारंभ हुई।

मंदिरों के अलावा गुप्तकालीन स्मारक में स्कंदगुप्त का भीतरी स्तभ्भ, चन्द्रगुप्त II का महरौली लौह स्तभ्भ आदि।

ङ) मूर्तिया :– गुप्तकालीन मूर्तियाँ इतिहास स्त्रोत सामाग्री में प्रमुख स्थान रखता है। गुप्तकाल अनेक मूतियों का निर्माण हुआ। जिससे वराह, शिव, गंगा, यमुना की मूर्तियाँ प्रमुख है।

च) चित्रकला :– गुप्तकालीन चित्रकला का अनुपम उदाहरण अंजता की गुफा में तथा बाघ की गुफाओं में चित्र है। इन चित्रों से गुप्तकाल की चित्रकारी कला में उन्नति का आभाष मिलता है।

छ) अवशेष :– इसके अन्तर्गत बस्तियों के उन्खलन के दौरान प्राप्त सामाग्री जो अवशेष रूप में प्राप्त होते है उन्हें रखा जाता है। वैसे तो गुप्तकालीन अवशेष बहुत ही कम मिलते है क्योंकि अरब आक्रमणकारियों ने आक्रमण के समय भवनो तथा नगरो को पूरी तर नष्ट कर दिया करते थे जैसे नालंदा के पुस्तकालय सामग्री, लेकिन नालंदा का खंडहर गुप्तकालीन भवन निर्माण की भव्यता को दर्शाता है।

2) साहित्यिक स्त्रोत :– गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत सामाग्री में साहित्यिक स्त्रोत सामाग्री का प्रमुख स्थान है। इन साहित्यिक स्त्रोतों को दो वर्गो में विभाजित किया जाता है।

क) धार्मिक साहित्य :– इसके अन्तर्गत वैसे पुस्तकों एवं ग्रन्थों को रखा जाता है जिनकी रचना धार्मिक परम्परा, रीति–रिवाज संस्कार आदि बातों को ध्यान में रखकर की गई थी। पुराणों का जो वर्तमान स्वरूप प्राप्त होता है, उसकी रचना गुप्तकाल में ही हुई है। इसके अलावा अनेक स्मृतियों की भी रचना गुप्तकाल में हुई है। जिनमें नारद स्मृति, परासर स्मृति, कात्यायन, बृहस्पति स्मृति प्रमुख है। धार्मिक साहित्य के तीन वर्ग है। पहला ब्राहमण साहित्य दूसरा बौद्ध साहित्य एवं तीसरा जैन साहित्य।

ख) धर्मेत्तर साहित्य :– धार्मिक साहित्य के अलावा गुप्तकालीन इतिहास को जानने के धर्मेत्तर साहित्य का बहुत ही महत्वूपर्ण स्थान है। इस काल में अनेक रचनाये ऐसी है जो तत्कालीन समाज, अर्थव्यवस्था एवं राजनीति की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करती है। इसी काल में प्रसिद्ध कालीदास, विशाखदत्त, शुद्रक, वात्सायन तथा वज्जिका जैसे विद्वान, कवि एवं साहित्कार हुए। असके अतिरिक्त वराह मिहिर, आर्यभट्ट जैसे खलोलविद्ध एवं ज्योतिष हुए। गुप्तकाल में बौद्ध दर्शन पर अनेक ग्रन्थों की रचना की गई है जिनमें असंग ने योगाचार, भूमिशास्त्र

आर्यवाचा इत्यादि की रचना की। जैन दार्शनिकों ने भी अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें सिद्वसेन ने न्याय दर्शन पर न्यायावतार नामक पुस्तक प्रमुख है।

3) विदेशी विवरण :– गुप्तकालीन इतिहास लेखन में विदेशी विवरण एक पूरक की तरह कार्य करते है। वैसे तो गुप्तकाल के प्रचुर मात्रा में भारतीय ऐतिहासिक स्त्रोत उपलब्ध है। इसके बाद भी विदेशी यात्रियों द्वारा लिखित विवरण इसमें अधिक सहायक सामाग्री का कार्य करती है, जो भारतीय ऐतिहासिक स्त्रोतों की प्रमाणिकता को बढ़ा देती है। गुप्तकाल के प्रमुख विदेशी विवरण इस प्रकार मिलते है–

क) फह्यान :– ये चन्द्रगुप्त II के शासन काल में भारत आया था। उनका विवरण तत्तकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति का पता चलता है।

ख) सुगयुंग :– इसके वर्णन से हूणों के आक्रमण के विषय में जानकारी मिलती है।

ग) ह्वेनसांग :– ये हर्षवर्द्वन काल में भारत आये थे। फिर भी उनके विवरण में गुप्तकाल की भी जानकारी मिलती है।

घ) इत्सिंग :– यह 7वीं सदी का विदेशी यात्री है लेकिन इसके वर्णन में गुप्तों की उत्पति एवं उनके मूल स्थान के बारें में जानकारी मिलती है।

ङ) अल्वेरूनी :– वस्तुतः यह 11 वी सदी का मुस्लिम यात्री था। फिर भी इसके वर्णन से गुप्त काल के तिथियों के निर्धारण में सहायता मिलती है।

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट हो जाता है कि गुप्तकालीन इतिहास को जानने के लिए प्रचुर मात्रा ऐतिहासिक स्त्रोत उपलब्ध है। जिनकी सहायता से प्राचीन भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय की रचना की जा सकी।